# काश्मीरिकशब्दानां संस्कृतशब्दा एव प्रभवः

[ बदरीनाथ शास्त्री, ओरियण्टल् कालेज्, श्रीनगरम् ]

काश्मीरदेशे ईशवीयत्रयोदशशताब्दीपर्यन्तं (1300 A.D.) लोकभाषा संस्कृतभाषैव आसीत्। अयं देशः 'शारदापीठ' इति नाम्ना जगति विख्यात आसीत्। अत्रानेकैर्निष्णातशास्त्रिभिः विद्वद्भिर्भिन्नभिन्नविषयेषु संस्कृतभाषायामनेकाः कृतयो लिखिताः। विशेषतो दार्शनिकसाहित्यिकशास्त्राणां मनोहराः सुमनसोऽस्मिन्नेव काश्मीरजनपदे विकासविलासमासाद्य परिपूर्णं साफल्यमन्वभूवन्। निखिलेऽपि भारते इतिहासग्रन्थाभावे कल्हण-जोनराज-प्राज्यभट्ट-शुक-कृतराजतरङ्गिणी केषां सहृदयानां चेतसां न विस्मयमातनोति? नाट्यशास्त्रमलङ्कारशास्त्रञ्चापि इहैव परिपूर्णं विकासमलभताम्। नाट्यशास्त्ररहस्योद्भेदि 'अभिनवभारती' नाम भाष्यमपि काश्मीर एव निरमीयत। अयमेव देशोऽलङ्कारशास्त्रस्य केन्द्रं मन्यते। काश्मीर एवालङ्कारशास्त्रज्ञानां वामन-उद्भट - आनन्दवर्धन - मम्मट - अभिनवगुप्त - महिमभट्ट - कैयट-रुद्रटादि-लेखकानां प्रसूतिस्थानम्।

तथा चोक्तं लेखकेन —

> "धन्योऽयं काश्यपो देशः सुनगैस्सुनदैर्युतः।
> कैयटरुद्रमम्मटाः सोमानन्दोत्पालादयः॥
> मङ्खक्षेमेन्द्ररूय्याद्याः आचार्याः कल्हणादयः।
> लेभिरे यत्र जन्मानि भिन्नशास्त्रविशारदाः॥"

इत्थमेवान्येऽपि वसुबन्धुशिवस्वामिमङ्खबिल्हणादयोऽनेककविताकाननकेसरिणो निजजन्मना काश्मीरं भूषयामासुः। इदं सर्वं जगत् काश्मीरोत्पन्नशैवशास्त्रस्य योगदानेन (contribution) ऋणीभूतमस्ति। छन्दःशास्त्रस्य बौद्धसाहित्यस्य चापि प्रणेतारः पत्येकपिंगलादयः आचार्या अत्रैव बभूवुः। कश्मीरे त्रयोदशशताब्द्याः पूर्वं संस्कृतं विना काचन भाषा नोपलब्धाऽसीत्। येनैतत्स्पष्टं भवति यत् त्रयोदशशताब्द्याः पूर्वमस्मिन्देशे लोकाः परस्परं संस्कृतभाषयैव

व्यवहारं कुर्वन्ति स्म। काश्मीरकमहाकविना बिल्हणेनापि स्वरचिते विक्रमाङ्कदेवचरितनाम्नि महाकाव्येऽष्टादशसर्गे षष्ठश्लोके एवमुक्तम्—

"ब्रूमः सारस्वतकुलभुवः किं निधेः कौतुकानां
तस्यानेकाद्भुतगुणकथाकीर्णकर्णामृतस्य।
यत्र स्त्रीणामपि किमपरं जन्मभाषावदेव
प्रत्यावासं विलसति वचः संस्कृतं प्राकृतञ्च॥"

ईशवीयत्रयोदशशताब्दीं यावत् कश्मीरस्य निखिलं साहित्यं संस्कृत एवोपलभ्यते स्म नान्यस्यां कस्याञ्चित् भाषायाम्। त्रयोदशशताब्द्यां प्रथमं पुस्तकं शितिकण्ठरचितमहानयप्रकाशोऽस्ति। तदनन्तरं अर्थात् त्रयोदशशताब्द्यनन्तरं ईशवीयचतुर्दशशताब्द्यां कश्मीरे न किमपि साहित्यं कश्मीरभाषायां लभ्यते। ततश्चतुर्दशशताब्द्यां लल्लावाक्यानां संग्रह उपलभ्यते यस्मिन् कश्मीरभाषाशब्दाः संस्कृतमयाः लभ्यन्ते। तस्मिन्नेव काले अर्थात् ईशवीयत्रयोदश-चतुर्दश-शताब्द्यां मुस्लिमधर्मानुयायिनः सैयदायाः पश्चिमसीमातः, अर्थात् काबुलदेशात् कश्मीरदेशे आगताः। तैरत्र कश्मीरदेशे स्वनिवासस्थानं कृतम्। मुस्लिमसंस्कृतिरपि तैरत्र प्रसारिता। तेषामागमनेन बहवोऽरबीय-फारसीय-शब्दाः कश्मीरशब्देषु मिश्रिता बभूवुः। लल्लाकाले एव त्राराख्यग्रामवास्तव्यस्य कविषेख नूरदीन नाम नुन्द-ऋषेः कश्मीरभाषायां वाक्यानि लभ्यन्ते, येषु फारसी, अरबी शब्दानामाधिक्यं वर्तते। पश्चात् बहवः कवितालेखका यथा बाहबखार, अजीज़-दरवेश, ख्वाजा-हबीब, गुलाम हसैन गणाई, लच्छमनभट्टनागाम, दयारामगंजू, परमानन्द, कृष्णदास, रुपद्यदादयः कश्मीरे बभूवुः। मुस्लिमकविभिः स्वरचनासु अरबी-फारसी-भाषाशब्दानां प्रयोगोऽधिकरूपेण कृतः। हिन्दुकवीनां रचनासु संस्कृतभाषायाः प्रयोग आधिक्येन लभ्यते। फारसी, अरबी, संस्कृतशब्दान् विहाय ये कश्मीरभाषाशब्दा अवशिष्टा भवन्ति तेषामेवावशिष्टशब्दनां विषये पाश्चात्यभाषाशास्त्रिणां ग्रेयर्सन्प्रभृतिविदुषां मतमस्ति। * यत्ते शब्दाः

* Elements of the Science of Language, by Taraporewala, Page 362.

दर्ददेशोत्पन्नाः सन्तीति। [बलचिस्तान तञ्जीरनदी मध्यभागो दर्ददेशः] तद्देश-भाषाशब्दोत्पन्नाः दार्दिकाः। परं तेषां मतं न मे संमतम्। मयास्मिन् विषये अन्विष्य एतन्निश्चितं यत् काश्मीरिकशब्दाः वस्तुतः संस्कृतशब्दा-नामेव रूपान्तरभूताः सन्ति। अर्थात् संस्कृतशब्दाः प्राकृतरूपेण अपभ्रंशेन वा काश्मीरिकशब्दरूपं जगृहुः। अपभ्रंशशब्दा एव कश्मीरभाषायां परिवर्तिताः सन्ति। यथा—

**नियमः (१) केचन संस्कृते क्षान्तशब्दाः कश्मीरभाषायामागत्य छान्ते परिवर्तिताः यथा —**

| संस्कृतशब्दाः। | कश्मीरशब्दाः। | संस्कृतशब्दाः। | कश्मीरशब्दाः। |
|---|---|---|---|
| पक्ष | पछ | भिक्षा | बेछ |
| तक्ष | तछ | सुभिक्ष | स्वछ |
| रक्ष | रछ | बुभुक्षा | बुछ |
| लक्ष | लछ | दक्षिण | दछुन |
| कक्ष | कछ | वीक्षण | बुछुन |
| वक्ष | वछ | पक्षिण | पछन |
| यक्ष | यछ | मक्षिका | मैछ |
| माक्ष | माछ | क्षालन | [illegible]छुन |
| लाक्ष | लाछ | मन्दाक्ष | मन्दछ |
| द्राक्षा | दछ | शिक्षण | ह्यछुन |
| अक्षि | अैछ | क्षीण | छुन |
| कुक्षि | कुछ | [ विशेषः ] | |
| लिक्ष | लैछ | पक्षति - पख। | |

अवबोधनम्—आदौ मध्ये च केचन क्षान्तशब्दा छान्ते परिवृत्तिमाप्ताः।

(२) केचन संस्कृते षान्त (शान्त) शब्दाः कश्मीरभाषायामागत्य हान्ते परिवर्तिताः । यथा—

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| पौष | पुह् | शकुन् | ह्यकुन |
| तुषा | तुह् | शमन | हमुन |
| कोश | कुह् | शृंखल | हंकल |
| माष | माह् | चतुर्दश | चुदेह |
| शरद | हरुद | शिम्बा | हिम्बा |
| कृष्ण | क्रहुन | श्वित्र | ह्यथर |
| दश | दह् | शिक्षण | ह्यछुन |
| शत | हथ | पिष्टन | पिहुन |
| शाक | हाक | विंशति | वुह |
| शुष्क | हुख | त्रिंशत् | त्रेह |
| घर्षण | गग्रहुन | श्वान | हून्य |
| श्वशुर | हिहुर | बाष्प | बाह |
| वैशाख | बहिख | शृङ्ग | ह्यङ्ग |
| आषाढ | हार | चूष | चैह |
| मशक | मोह | उपवेशन | विहुन |
| लशुन (रलयोरैक्यम्) | रुहन | शनैः शनैः | हन्य हन्य |

अवबोधनम्—आदौ मध्ये च शान्तशब्दाः हान्ते परिवृत्तिमाप्ताः ।

(विशेषः)

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| रोषण | रोषुण | महिष | मैष |
| कषण | कषुण | तृषा | तृष |
| श्याम | श्याम | पुष्प | पोश |

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| शकुन | शगून | शृगाल | शाल |
| शोभा | शूभ | शून्य | शून्य |
| शङ्का | शेङ्क | श्वास | शांश |
| वर्षण | वर्षुण | शस्त्रक | शषतेर |
| पेशल | पिशुल | षष्ठः | ष |

(३) केचन संस्कृते पादिशब्दाः कश्मीरभाषायामागत्य वान्ते परिवर्तिताः। यथा—

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| पत्र | वैथर | स्थापन | थवुन |
| पथ | वथ | स्थापय | थैव |
| पानीय | वोन्य | दापन | दॊवुन |
| ताप | ताव | नापित | नैविद |
| लेपन | लिवुन | तापन | तवुन |
| कच्छपः | कच्छवा | वापुन | ववुन |

अवबोधनम्—मध्ये अन्ते चोपर्योक्तोदाहरणेषु केचन पादिशब्दा वान्ते परिवृत्तिमाप्ताः ॥

(विशेषः)

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| पुष्य | पोश | पक्षिपूतः | पछनपूत |
| पालन | पलुन | कुक्कुटपूतः | कुकरपूत |
| पारद | पारुद | मेषपूतः | म्यांपूत |
| पेटा | पीछ्य | चौरपूतः | चूरपूत |
| पाक | पाक | कपोतपूतः | कोतरपूत |
| रौप्य | रुफ | कम्पन | कंपुन |
| काकपूतः | कावपूत | | |

(४) केचन संस्कृते ष्ठान्तशब्दाः ष्टान्तशब्दाश्च कश्मीरभाषायामागत्य ठान्तावशिष्टाः टान्तावशिष्टाश्च सन्ति। यथा—

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| ज्येष्ठ | ज्युठ | मयुष्ठक | म्वठ |
| ओष्ठ | वठ | रुष्ट | रूठ |
| कोष्ठ | कुठ | भ्रष्ट | भ्रेठ |
| काष्ठ | काठ | वेष्टन | वुठुन |
| अष्ट | ऐठ | उच्छिष्ट | छ्युट |
| उष्ट्र | ऊंठ | अङ्गुष्ट | न्युठ |
| मुष्ठ | मुठ(खाद्यपदार्थ) | मिष्ट | म्मूठ |
| कुष्ठ | कुठ | पुष्ट | पूठ |

(५) केचन संस्कृते रेफान्विताः शब्दाः कश्मीरभाषायामागत्य रेफहीनाः सन्ति। यथा—

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| स्वर्ण | स्वन | अर्बुद | अबुद |
| पर्ण | पन | आर्द्र | अदुर |
| कर्ण | कन | खर्जूर | खजूर |
| चूर्ण | चून | आर्द्रक | अदरख |
| शूर्प | शुप | वर्तक | बतख |
| कूर्म | कुम | भर्जन | बुजुन |
| कर्म | कैम | मार्जन | मान्जुन |
| चर्म | चम | गर्जन | गृजुन |
| गर्त | गार | कर्पासी | कपस |
| शर्करा | शक्कर | जर्जर | ज्वजुर |
| कर्पूर | कोपूर | चर्मकार | चमार |

(विशेषः)

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| घर्म | घर्म | भूर्ज | बुर्ज़ |
| सर्प | सर्प | मार्ग | मर्ग ? |

(६) केचन संस्कृते त्रान्तशब्दाः कश्मीरभाषायामागत्य तान्ते परिवर्तिताः । यथा—

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| तत्र | तुत | यत्र | युत |
| कुत्र | कुँत | दात्र | द्रोत |
| अत्र | ओुत | रात्रि | रात |

(७) केचन संस्कृते सकारादिशब्दाः कश्मीरभाषायामागत्य सकारहीना एवोपलभ्यन्ते । यथा—

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| स्थाल | थाल | (धातुनामानि) | |
| स्नुषा | नुष | स्वर्ण | सुन |
| स्तन | थन | रौप्य | रुफ |
| स्तम्भ | थम्ब | शस्त्रक | शषतैर |
| स्फुरण | फोरुन | पारद | पारुद |
| स्फुटन | फुटुन | गैरिक | ग्यूर |
| स्थान | थान | (पशुपक्षिनामानि) | |
| स्थापन | थवुन | नकुल | नूल |
| (विशेषः) | | पक्षिण | पैछुन |
| स्वर्ण | स्वन | काक | काव |
| स्वाद | साद | सर्प | सर्प |
| स्मरण | सुरुण | हस्ती | हुस |

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| वानर | वान्दुर | वर्तक | बतुख |
| सिंह | सैह | चक्रवाक | चक्रकुव |
| श्रृगाल | शाल | (शरीरसम्बन्धीनि नामानि) | |
| कच्छप | कछ्व | अक्षि | अंछ |
| कूर्म | कूम | कर्ण | कन |
| चटक | चैर | ओष्ठ | उठ |
| शारी | हैर | नासिका (नासा) | नस |
| ऊष्ट्र | ऊंठ | दन्त | दन्द |
| सूकर | सुअैर | अक्षिबाल | अछरवाल |
| महिष | मैष | जङ्घा | ज़ङ्घ |
| मयूर | मोर | खुर | खुर |
| मृग | मृग | नख | नम |
| घोटक | गुर | जिह्वा | ज्यव |
| गौ | गाव | तालु | ताल |
| खर | खर | हस्त | अैथ |
| कोकिल | कुकिल | अङ्गुलि | अङ्गुज |
| गोनस | गुनस | रक्त | रथ |
| मण्डूक | निञ्यमुण्डज | मल | मल |
| कुक्कुट | कुकुर | मूत्र | मैथर |
| श्वान | हूञ्य पु० | अङ्गुष्ठ | न्युठ |
| शुनी | हूञ्य स्त्री० | मुखगण्ड | मुगण्ड |
| गृध्र | ग्रघ | प्लीहा | पुह |
| राजहंस | राज़हंस | काणः | कोण |
| कृकलास | केङ्कलैट | गल | गल |
| तित्तिरि | तितुर | नाडी | नैर |
| | | कुब्ज | कुब |

| सं. श. | क. श. |
|---|---|
| कपाल | कैल |
| आस्य | अँस |
| (खाद्यपदार्थनामानि) | |
| एला | अैल |
| जीरक | ज्युर |
| शुण्ठी | शोण्ठ |
| हिण्ङ्गु (हिङ्गु) | यङ्ग |
| नारकेल | नारजील |
| खदिर | खैर |
| निम्बा | न्युम |
| दाडिम | दैन |
| कपित्थः | कैथ |
| अजमोदा | ज्याविन्द |
| कारवेल | करेल |
| धान्य | धान्य |
| लवङ्ग | रुङ्ग |
| चणक | चण |
| भंगा | भङ्ग |
| शिम्बा | ह्यम्ब |
| मरीच | मर्च् |
| हरिद्रा | लिदर |
| भक्त | बैत |
| शाक | हाक |
| माष | मौंह |
| तण्डुल | तुमुल्ल |
| कांजिका | कैञ्ज् |

| सं. श. | क. श. |
|---|---|
| लाजा | लाय |
| मसूर | मुसुर |
| मुद्गा | मुङ्ग |
| लशुन | रुहन |
| पलाण्डु | प्राण |
| व्रीहि | व्रय |
| चणक | चण |
| तैल | तील |
| अहिफेन | अँफीन । |
| (ऋतुनामानि) | |
| वैशाख | वह्यख |
| ज्येष्ठ | ज़ेठ |
| आषाढ | हार |
| श्रावण | सावुन (थावुन) |
| भाद्रपद | भदरप्पथ |
| अश्विन | अँशिद |
| कार्तिक | कत्तक |
| मार्गशीर्ष | मञ्जहोर |
| पौष | पुह |
| माघ | माघ |
| फाल्गुन | फागुण |
| चैत्र | चिथर |
| (दिननामानि) | |
| आदित्यवार | आथवार |
| चन्द्रवार | चन्द्रवार |

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| भौमवार | भौमवार | बुभुक्षाहत | बुछ्हुत |
| बुधवार | बुधवार | आतपहत | तापहुत |
| बृहस्पतिवार | ब्रस्वार | मन्दाक्षयुत | मन्दछहुत |
| शुक्रवार | शुक्रवार | शततमः | हत्युम |
| भट्टारकवार ? | भट्टवार | सहस्रतमः | सेस्युम |
| (संख्यानामानि) | | कतमः | कच्युम |
| एक | अ॑ख | यतमः | ईत्युम |
| द्वि | ज़ | सतमः | तीत्युम |
| त्रि | ट्य | ततः | तति |
| चतुर् | चोर | यतः | यति |
| पञ्च | पञ्छ | कुतः | कत्ति |
| षष्ठ | ष | इतः | हेति इत्य। |
| सप्त | सथ | अमुतः | अति |
| अष्ट | अ॑ठ | (भिन्नशब्दनामानि) | |
| नव | नव | तप्त | तोत |
| दश | दह | उपल | पल |
| शत | हथ | कुल्या | कुल |
| सहस्र | सास | खुर | खुर |
| लक्ष | लछ | आङ्गण | आङ्गुण |
| कोटि | करोड (र) | उत्थान | उथुन |
| पद्म | पद्म | हसन | असुन |
| नील | नील | जृम्भण | ज़ोमन |
| शङ्ख | शङ्ख | अन्ध | अंत ओन |
| दशशङ्ख | दशशेङ्ख | हिक्क | ह्युक |
| निराहत | न्यन्दरिहुत | सिक्त | सुठ स्योठ। |
| तृषाहत | तृषहुत | कटु | कठ |

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| रुदन | वदुन | लिहन | रयवुन |
| लाला | लालः | खनन | खनुन |
| थूत्कार | थुक | परिमाण | परमान |
| विद्युन्माला | वुजमैल | ग्लान | गलुन |
| रज्जु | रैज़ | दद्रु | दंदर |
| दात्र | द्रोत | सक्तु | सुतु |
| अन्ध्रघटा | मैन्यघटः | कज्जल | कजुल |
| आरव | आलव | कण्टक | कोण्ड |
| नाद | नाद | लब्ध | लभ |
| आम | ओम | प्रत्येक | प्रथकांह |
| मचर्चिका | मचर | यौवन | यावुन |
| मुसल | मुहुल | कार्य | कार |
| उलूखल | उखुल | द्राव | द्राव |
| भाजन | बौन (बान) | कुसीद ? | सूद |
| कृमि | क्युम | दण्ड | डण्ड |
| मत्कुण | मैकुन | रङ्ग | रङ्ग |
| जाल्म | जैलिम | तूलिका | तुज |
| निगरण | न्यङ्गलुन | निगडन + | गण्डुअन |
| कफ | कफ | ईर्ष्या | रैषा |
| सैकत: | स्यख | प्रचुर | चुर |
| निसरण | नेरुन | रोचन | रोचुन |
| सूचिका | सैचन | सीवन (Sew) | सुवुन (सुवुन) |
| घरट्टा | घ्रट | वलयित | वुलयुत |
| उड्डयन | उड्डन | कटु | कैठ |
| वयस्या | व्यस | गोल | गोल |
| गुम्बद | गुम्बद | दृढ | दुरै |

| सं. श. |
|---|
| तन्वी |
| अङ्गीकार |
| दहन |
| मध्यम |
| कनिष्ठ |
| भगिनी |
| कर |
| नम |
| तारक |
| जाल |
| माला |
| मुक्त |
| कथा |
| छिन्न |
| भिन्न |
| नील |
| अश्रु |
| उष्ण |
| हल |
| चिर |
| घास |
| नव |
| हठ |
| निद्र |
| ज्ञान |

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| तन्वी | तैव्य | लेखन | लेखुन |
| अङ्गीकार | आङ्कार | ऋतु | ऋथ |
| दहन | दज़ुन | द्रुल वट | द्रुल वट |
| मध्यम | मन्ज्युम | पिञ्जर | पञ्जर |
| कनिष्ठ | कून्छ़ | पुराण | प्रोन |
| भगिनी | बिञ्य | मारण | मरुण |
| कर | कर | मन्थन | मन्दुन |
| नम | नम | मध्याह्न | मन्ध्युन |
| तारक | तारक | प्रहर | पहर |
| जाल | ज़ाल | सर | सर |
| माला | माल | धत्तूर | धतुर |
| मुक्त | मुक्त | जङ्गल | जङ्गल |
| कथा | कथ | वन | वन |
| छिन्न | छ्युन | शमन | शेमुन |
| भिन्न | ब्युन | देवर | द्युय |
| नील | न्यूल | अर्ध | औड |
| अश्रु | ओश | दूर | दूर |
| उष्ण | उष्ण | त्रिकःर | त्रुखक |
| हल | हल | खार | खार |
| चिर | चेर | कम्बल | कमल |
| घास (Grass) | घास | अन्तिम | अन्युम |
| नव (New) | नौव | नाराच | नरुच |
| हठ | हठ | सीसकः | शीशा |
| निद्रा | निन्दर | कुलाल | क्राल |
| ज्ञान | ज़ान | मेलन | मेलुन |

| सं. श. | क. श. | सं. श. | क. श. |
|---|---|---|---|
| नमितः | नमित्‌ | निकृन्तन | निकरुन। |
| बद्धः बन्ध | बन्द | लुण्ठय | लूटुन |
| कील | क्युल | एहि | यि |
| समेत | समिथ | उपायकरणम् | पायकरुण |

| संस्कृतवाक्यानि | कश्मीरभाषावाक्यानि |
|---|---|
| तत्र मा गच्छ | तोत मै गच्छ |
| चिरं मा कुरु | चेर मै कर |
| स एक जाल्म आसीत् | सु अख ज़ालिम ओस । |
| तत्रं मा खादय | तोत मै खि । |
| स मित्रं आसीत् | सु म्युल ओस । |
| अहो ! सः कुत आगतः | अहो ! सु कति आव । |
| मा चल | मै चल । |
| सभामध्ये कति जना आसन् | सबि मञ्ज कैंस ज़नि अँसि। |
| आमभाजनं तत्र मा स्थापय | ओम भानै तति मै थव । |
| ज्ञानं मा कुरु | ज़ान मै कर । |
| तत्र मा चल | तोत मै चल । |
| तत्र मा धाव | हुतोत मै धव । धव । |
| पुष्पं प्रफुल्लम् | पोष फोल । |
| शुष्कघासभारं मा तत्र स्थापय | हुख घासभोर मै तैति थव। |
| तत्र मन्दाक्षं मा कुरु | तति मन्दछ मै कर । |
| पानीयं मलिनं मा कुरु | पोन्य मैल मै कर । |
| तत्र मा वस | तति मै बस । |
| मह्यं एतत् फलं न रोचते | म्य यै फल न रोचानछ । |
| क्षीणं मा तोलय | छुन मै तेल । |
| परिमार्णः तस्यै देहि | परमान तैस दि । |

| संस्कृतवाक्यानि | कश्मीरभाषावाक्यानि |
| --- | --- |
| तत्र अनेके लोका आसन् | तति अनेक लुख ऐसि। |
| यत् किञ्चित् गतम् तत् गतम् | यि किंह गव् ति गव । |
| सा मृता । | सु मुयै। |
| स घासभारं न शक्नोति | सु घासभोर ह्यकानहुनै । |
| भक्तम् दग्धम् | अने दौप । बत्त दोर । |
| स समस्य सम आसीत् | सु समिससुम ओसै । |
| तस्य पादस्य तले एकः सर्पं आसीत् | तस् पदिसतल ऐख सर्प ओसै। |
| स तत्कार्यस्य मध्ये लग्न आसीत् | सु तथ कारस मञ्ज लगुमुत्त ओस। |
| स मा करिष्यति | सु मा करि । |
| तुम्बीमानय | तुम्ब ऐन्त । |
| मा लिख | मै लेख । |
| निर्गच्छ | नेर् गच्छ ॥ |